An executive summary of the final report of work done on the Minor Research Project of **Mr. Mahabubali A. Nadaf**, entitled "**Meharunnisa Parvez kruth SAMARANGAN Upanyas ek adhyayan**", sanctioned by UGC, vide sanction letter No. – MRP(H)-0818/13-14/KAMA002/UGC-SWRO

Date – 28-March-2014

समकालीन आदर्शोन्मुख-यथार्थवादी महिला उपन्यासकारों में मेहरुन्निसा जी का स्थान अग्रणी है । मेहरुन्निसा जी एक ओर अपनी रचना प्रतिभा से साहित्य में अपनी पहचान बनालिए हैं तो दूसरी ओर साहित्य में अंकित आदर्शों को साकार बनाने में क्रियाशील हैं । लेखिका अलग-अलग विधाओं में लिखने के बावजूद वे संपादक के साथ-साथ कथाकार के रूप में सुपरिचित हैं।

मेहरुन्निसा ने अपने साहित्य के माध्यम से आदिवासी तथा नारी समस्याओं को वाणी दी है। नारी का प्रेम, सेक्स, विवाह की समस्याओं को स्पष्टता से व्यक्त किया है। यह बात उनके परिवार तथा संस्कारों को देखते हुए बडा साहस और चुनौति पूर्ण कार्य लगता है। लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रचलित विवाह, प्रेम, काम जैसी धारणाओं को नए विचारों से बदलने की जरूरत महसूस करती हैं। मेहरुन्निसा जी की एक विशेषता यह है कि इन्होंने प्रगति की ओर आगे बढते समय पुराना तहस-नहस करने की धारणा व्यक्त नहीं करती है । बल्कि जमाने के साथ बदलने का तौर-तरीका अपनाया है।

मेहरुन्निसा जी के साहित्य का अध्ययन करने के बाद लगता है कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में एक बहुत ही गहरा संबंध है। आमतौर पर सब लेखकों का साहित्य सजीव लगता है,

किंतु मेहरुन्निसा जी का साहित्य इसलिए सजीव लगता है कि उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी सहा, देखा, अनुभव किया उसे ही अपने साहित्य में अंकित किया है।

मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में मध्यम वर्ग के आचार, विचार, व्यहार और उनकी आर्थिक स्थिति का चित्रण दिखाई देता है। राजनीति में रणनीति के दाँव पेंच कैसे खेले जाते हैं, इसका चित्रण किया गया है। मनुष्य के संघर्षमय जीवन का चित्रण कर, जीवन की सार्थकता अमीर बनने में नहीं, दयावान बनाने में है बताया है। इससे मनुष्य का दु:ख, उसकी घुटन, उसकी कुंठाएँ, उसकी सामाजिक आवस्था, उसकी मजबूरी उसका मानसिक संघर्ष आदि व्यथा-कथा का परिचय मिलता है।

मेहरुन्निसा के समरांगण उपन्यास में उपकथाओं के सहारे न्याय की बातें केवल बताए ही नहीं, उनके लिए मजबूत आधार भी पेश करते हैं। इस लेन-देन के जीवन में कई बार हमें मेहसूस होता है कि देते समय लगता है कि बहुत कुछ दे रहा हूँ, लेते समय बिलकुल कम लगता है। लेन-देन अपने स्थान पर तटस्थ रहती है। उसे हमारी सोच बढा-घटा देती है। जैसे गोपीलाल बंगाली सिंह को पत्नी के कंगन उतार कर देते समय दोनों को यह अहसास जरूर हुआ था। दूसरी ओर इसका एक और रूप भी दिखाई देता है, मिट्ठू सिंह का गोपीलाल को एक रुपया ऋण देना गोपीलाल के लिए डूबते को तिनके का सहारा था।

सही जीवन बिताने के लिए बहुत कुछ पढकर पंडित, ज्ञानी, विद्वान बनने की आवश्यकता नहीं। हमारे अच्छे संस्कारों को सीख कर, उनका पालन करना चाहिए। इससे मुझे लगता है कि फिर किसी के सामने झुकने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

मेहरुन्निसा ने 'समरांगण' उपन्यास में सामाजिक विसंगतियों का मार्मिक विवरण दिया है। लेखिका स्वयं नारी होने के कारण नारी की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। मनुष्य की मानसिकता, उसकी धार्मिकता, उसका कुंठाग्रस्थ जीवन, अशिक्षितों की कमजोरी, शिक्षितों

की असहायता आदि को लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से सफलतापूर्वक चित्रित किया है।

मेहरुन्निसा ने 'समरांगण' उपन्यास में राजनीतिक समस्याओं के साथ नारी समस्याओं का वर्णन किया है। इसमें लेखिका ने हकीकत से अवगत होकर सामाज में व्याप्त अराजकता का चित्रण किया है। इसमें कमजोर समाज को स्वस्थ बनाने की कल्पना को साकार किया है।

उपन्यास को प्रभावशाली बनाने में उसकी भाषा एवं शिल्प दोनों विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। मेहरुन्निसा जी ने 'समरांगण' उपन्यास की भाषा-शैली के अंतर्गत संदर्भानुसार सजग तथा सहज भाषा का प्रयोग किया है। जिसमें मार्मिक भाषा, अलंकारों, मुहवरों, लोकोक्तियों, से युक्त भाषा का प्रयोग किया है। संवाद के अंतर्गत उन्होंने व्याख्यात्मक, व्यावहारिक, नाटकीय, हास्य-व्यंग्यात्मक, गंभीर, अलंकारिक, कथोपकथन का आयोजन किया है। इसमें संक्षिप्त, चुटिले, मर्मस्पर्शी तथा नाटकीय संवादों का आयोजन किया है।

'समरांगण' सामाजिक उपन्यास है। इसमें बहुतसारे पात्र हैं, पर एक के बाद एक घटनाएँ पात्रों को अपनी इच्छानुसार मोड देती हैं। युध्द में जीत के लिए बल के साथ भाग्य की भी आवश्यकता होती है। जीत मनुष्य को पाठ पढाए या न पढाए हार जरूर एक नया पाठ पढाती है। जैसे गोपीलाल अपने बेटे को अधीकारी बना नहीं सका। भलाई-बुराई में तपे पात्रों की निखार दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास एक विशेष परिवार का होकर भी आज के अनेक परिवारों का सचित्र दस्तावेज है।

Date : (Name & Signature)

Signature of the Principal